MP-PSC

राज्य सिविल सेवा

मेन्स

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

पेपर – 2 (B)

समाजशास्त्र

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	समाज की भारतीय संकल्पना	1
2	समुदाय, संस्कृति और मूल्य	7
3	संस्कृति और सामाजिक समरसता	14
4	सामाजिक संस्थाएं	18
5	जातिव्यवस्था	22
6	आश्रम एवं पुरुषार्थ	30
7	समाज और विवाह पर धर्म और संप्रदायों का प्रभाव	33
8	भारतीय समाज की संकल्पना	36
9	अपराध का बदलता परिदृश्य	39
10	वर्तमान बहस - भारत में परंपरा और आधुनिकता	50
11	राष्ट्र निर्माण की समस्याएँ	52
12	ग्रामीण समाज के अध्ययन के उपागम	62
13	किसान अध्ययन, ग्रामीण नेतृत्व, गुटबाजी, लोक सशक्तीकरण	79
14	ग्रामीण विकास के सामाजिक मुद्दे और रणनीतियाँ	88
15	शहरीकरण	97
16	भारत में औद्योगीकरण और सामाजिक परिवर्तन	104
17	औद्योगिक समाज में वर्ग और वर्ग संघर्ष	109
18	वैश्वीकरण	113
19	समाजशास्त्र का भारतीयकरण एवं शिक्षा का निजीकरण	117
20	सामाजिक संरचना एवं विकास	119
21	उत्तर आधुनिकीकरण	132
22	जनसँख्या सम्बन्धी समस्याएँ	134
23	शिक्षा	143

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	सामाजिक वर्गों से सम्बंधित मुद्दे	150
25	सामुदायिक विकास कार्यक्रम और विस्तार शिक्षा	153

1 Chapter समाज की भारतीय परम्परा

कुटुम्ब

- **'कुटुम्ब'** शब्द ,संस्कृत से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'परिवार'।
- प्राचीन वेदों में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात 'पूरी पृथ्वी एक परिवार है' की महान अवधारणा दी गयी है। जिसमें सम्पूर्ण विश्व को परिवार स्वरुप में निर्धारित किया गया है
- कुटुंब को रक्त-संबंधियों का समूह कहा जाता है।
- मानवशास्त्री और समाजशास्त्री कुटुंब के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अनेक कौटुंबिक समूहों का जिक्र करते हुए कहते हैं कि वे सभी समूह कौटुंबिक समूह हैं जिनके सदस्यों में कौटुंबिक संबंध पाए जाते हैं।
- कौटुंबिक समूहों में सबसे छोटा और कुटुंब का केंद्रीय समूह परिवार है।
- परिवार के अलावा वंश, कुल, बंधु, बांधव, सपिंड आदि अन्य कौटुंबिक समूह हैं।
- परिवार तथा अन्य कौटुंबिक समूहों में पहला भेद यह है कि परिवार में रक्तसंबंधियों के अलावा वैवाहिक संबंध वाले व्यक्ति भी पाए जाते हैं।
- जैसे :- माता, पिता और बच्चों वाले परिवार में, माता, पिता और बच्चों के बीच में रक्तसंबंध है तथा पति पत्नी में वैवाहिक संबंध है।
- कुछ अन्य कौटुंबिक समूहों में केवल रक्तसंबंधी सदस्य होते हैं।
- इसके अलावा एक परिवारों के सदस्यों का एक ही आवास होता है, जब कि अन्य कौटुंबिक समूहों के सदस्यों के लिए एक सामान्य आवास आवश्यक नहीं है।
- परिवार का स्वरूप आवास के नियमों से प्रभावित होता है, जैसे यदि एक समाज में पत्नी-पति के घर पर रहने के बजाय अपनी माँ के घर ही रहती हो, तो ऐसे परिवार को हम मातृस्थानीय परिवार (मेट्रिलोकल फ़ेमिली) कहते हैं।
- इसके विपरीत अन्य कौटुंबिक समूह वंशानुक्रम (डिसेंट) के नियमों पर आधारित है।
- एक व्यक्ति के लिए कुटुंब के व्यक्तियों को कामकाज के समय निमंत्रित करना या उनके यहाँ निमंत्रण में जाना, उनसे सहायता लेना या उनको सहायता देना, कौटुंबिक संबंधों को निभाने के लिए अनिवार्य हैं।
- कौटुंबिक संबंधों को निभाने के पहले यह जानना आवश्यक है कि कौन व्यक्ति इस समूह के सदस्य है।
- जो व्यक्ति रक्तसंबंधी हैं और बच्चे के जन्म के अवसर से कौटुंबिक संबंधों को निभा रहे हैं, व्यावहारिक रूप में वे ही कुटुंबी हैं।
- वैसे, जितने भी रक्तसंबंधी है वे सभी किसी न किसी कौटुंबिक समूह के सदस्य हैं।
- **समाजशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार** -"कुटुंब" एक सामाजिक इकाई होती है जो व्यक्तियों के बीच संबंधों का एक समूह होता है, यह एक समृद्धि, साझेदारी, और सामाजिक सहयोग रुपी केंद्र होता है जो एक सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का हिस्सा होता है। इसमें सदस्य एक रिश्ते के माध्यम से जुड़े होते हैं और एक-दूसरे के लिए साथी, समर्थक और साथियों के रूप में काम करते हैं।

कुटुंब की विशेषताएँ

समाजशास्त्र में कुटुंब एक महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई होती है। जिसे 'परिवार' के रूप में जाना जाता है। कुटुंब या परिवार के विशेषताएँ समाजशास्त्र में निम्न बिन्दुओ में निर्धारित हैं।

- **संरचना और संगठन:** कुटुंब एक छोटी समाजिक इकाई होती है जो एकत्रित व्यक्तियों का समूह होती है। यह संगठित होता है और सामाजिक प्राथमिकताओं के आधार पर व्यक्तियों के बीच अन्तर्क्रिया को नियंत्रित करता है।
- **संबंधों की प्रधानता**: कुटुंब में संबंधों का अत्यधिक महत्व होता है। यहाँ तक कि आधारभूत संबंधों की अद्वितीयता और महत्वता को भी समझा जाता है।
- **कुटुंबिक संपत्ति**: कुटुंब की संपत्ति अक्सर इकाई के सदस्यों के बीच साझा होती है और इसमें समाजिक और आर्थिक संबंधों की एक महत्वपूर्ण परंपरा शामिल होती है।
- **भावनात्मक सहारा**: कुटुंब के सदस्य आपसी सहारा प्रदान करते हैं और एक दूसरे का साथ देते हैं जब भी कोई संघर्ष या समस्या उत्पन्न होती है।
- **सांस्कृतिक परंपरा और संस्कृति**: कुटुंब अक्सर विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं और संस्कृति के आदान-प्रदान का केंद्र होता है। इसमें पीढ़ियों को संस्कृति, मूल्यों, और आदर्शों की शिक्षा दी जाती है।
- **शक्ति और प्रतिस्थापन**: कुटुंब एक स्थायी सामाजिक इकाई होती है जो व्यक्तियों को समर्थ बनाती है और उन्हें आत्मनिर्भरता का अवसर प्रदान करती है।
- **समाज में अभिवृद्धि का अवसर**: कुटुंब एक समाज में अभिवृद्धि का अवसर प्रदान करता है क्योंकि यह समाज के नवीनतम पीढ़ियों को ज्ञान, अनुभव और सामाजिक नैतिकता का अवलोकन करता है।

परिवार

- बर्गेस और लॉक के अनुसार: एक परिवार उन लोगों का एक समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के माध्यम से जुड़े होते हैं और एक ही घर बनाते हैं, जो पति और पत्नी, माता और पिता, भाई और बहन के रूप में अपनी सामाजिक भूमिकाओं में संलग्न होते है और एक साझा संस्कृति का निर्माण करते है।

परिवार की विशेषताएं

- **सार्वभौमिकता:** ऐसा कोई मानव समुदाय नहीं है जहां परिवार किसी न किसी रूप में मौजूद न हो।
- मालिनोवस्की का मानना है कि सामान्य परिवार, जिसमें माता, पिता और उनकी संतान शामिल हैं, आदिम, बर्बर और सभ्य लोगों सहित सभी संस्कृतियों में पाए जा सकते हैं।
- सार्वभौमिकता प्रजनन की आवश्यकता और आर्थिक मांगों के कारण है।
- **भावनात्मक आधार:** परिवार भावनाओं पर बना होता है।
- संभोग, प्रजनन, मातृ प्रेम, भ्रातृ स्नेह और माता-पिता की देखभाल के लिए हमारी प्रवृत्ति इसका एक हिस्सा हैं।
- यह प्यार, स्नेह, करुणा, सहयोग और दोस्ती की भावनाओं पर आधारित है।
- **सीमित आकार:** परिवार में सदस्यों की संख्या सीमित होती है। यह सबसे छोटी सामाजिक इकाई है। एक प्रमुख समूह के रूप में इसका आकार आवश्यकता से प्रतिबंधित है।
- **रचनात्मक प्रभाव:** एक ऐसा माहौल बनाता है जिसमें बच्चों को प्रशिक्षित और शिक्षित किया जाता है और इसके सदस्यों के व्यक्तित्व और चरित्र को आकार देता है। यह बच्चे की भावनात्मक हित को प्रभावित करता है।
- **सामाजिक संरचना का मूल:** परिवार की इकाइयाँ ही संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था बनाती हैं।
- **सदस्यों की जिम्मेदारी:** परिवार के प्रत्येक सदस्य की विशेष जिम्मेदारियां, कार्य और दायित्व होते हैं।
- **मैक्लेवर के अनुसार:** संकट के समय में पुरुष अपने देश के लिए श्रम कर सकते हैं, लड़ सकते हैं और मर सकते हैं, लेकिन वे अपने परिवारों के लिए जीवन भर परिश्रम करते हैं।
- **सामाजिक नियमन:** सामाजिक वर्जनाएँ और विधायी नियम दोनों ही परिवार की रक्षा करते हैं। संगठन को टूटने से बचाने के लिए समाज सावधानी बरतता है।

परिवार के प्रकार

विवाह के आधार पर

- **एकविवाही परिवार:** एक समय में केवल एक साथी होता है।
- **बहुविवाही परिवार:** एक साथी (पुरुष या महिला) के कई पति-पत्नी हैं।
- **बहुपति परिवार:** महिला एक ही समय में एक से अधिक पुरुषों से विवाह करती है।

निवास की प्रकृति के आधार पर

- **मातृस्थानीय निवास का परिवार:** वयस्कता प्राप्त करने के बाद, एक महिला अपनी मां के घर लौट आती है और अपने पति को अपने परिवार के साथ रहने के लिए ले जाती है।
- **पितृस्थानीय निवास का परिवार:** वयस्क होने के बाद, एक लड़का अपने पिता के घर लौटता है और अपनी पत्नी को अपने परिवार के साथ रहने के लिए लाता है।
- **परिवर्तित निवास का परिवार:** परिवर्तित निवास का परिवार वह होता है जो पति के घर में कुछ समय रहता है और फिर पत्नी के घर जाता है, वहां कुछ समय रहता है, और फिर पति के माता-पिता के पास वापस चला जाता है या कहीं और रहने लगता है।

वंश के आधार पर

- **मातृवंशीय परिवार:** पारिवारिक संबंध जो एक महिला से संबद्ध हो सकते हैं।
- **पितृवंशीय परिवार:** पारिवारिक संबंध जो किसी पुरुष से मिलते हैं।

प्राधिकार की प्रकृति के आधार पर

- **मातृसत्तात्मक परिवार:** एक मातृसत्तात्मक समाज, परिवार या संस्था में महिला अधिकारी होती हैं और अधिकार या संपत्ति माँ से बेटी को हस्तांतरित होती है।
- **पितृसत्तात्मक परिवार:** एक प्रकार की सामाजिक संरचना जिसमें पिता परिवार, कबीले या जनजाति का अंतिम अधिकार होता है, और उत्तराधिकार का पता पुरुष रेखा के माध्यम से लगाया जाता है, जिसमें पिता के वंश या जनजाति की संतान होती है।

आकार या संरचना और पीढ़ियों के आधार पर

- **एकल परिवार:** एक पारिवारिक इकाई जो माता-पिता और उनके बच्चों से बनी होती है। यह केवल एकल अभिभावक वाले परिवार, एक विशाल विस्तारित परिवार, या 2 से अधिक माता-पिता वाले परिवार से भिन्न होता है।
- **संयुक्त या अविभाजित परिवार:** एक विस्तारित परिवार संरचना जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में विशिष्ट है, जिसमें एक ही घर में रहने वाली कई पीढ़ियां शामिल हैं, जिनमें से सभी एक आम रिश्ते से जुड़ी हुई हैं।

सदस्यों के बीच संबंधों की प्रकृति के आधार पर

- **संगीन परिवार:** वह परिवार जिसमें ऐसे सदस्य होते हैं जो एक दूसरे से संबंधित नहीं होते हैं।
  - इस परिवार में दादा-दादी, चाची, चाचा और चचेरे भाई शामिल हैं, जो सभी एक ही घर में विवाहित जोड़े और उनके बच्चों के साथ रहते हैं।
  - रक्त संबंधियों के साथ-साथ तत्काल परिवार के सदस्य भी शामिल हैं।
  - विस्तारित परिवार को अक्सर एक रूढ़िवादी परिवार के रूप में जाना जाता है।
- **दाम्पत्य परिवार:** पति-पत्नी और उनके बच्चों से मिलकर बनता है। इसमें दो वयस्क पति-पत्नी और उनके नाबालिग बच्चे शामिल हैं जिनकी शादी नहीं हुई है।
  - इसमें केवल विवाहित जोड़े शामिल हो सकते हैं यदि जोड़े के बच्चे नहीं हैं या यदि बच्चे विवाहित हैं और उनके अपने परिवार हैं।

भारतीय परिवारों की बदलती प्रकृति

एकल परिवार

- एकल परिवार के रूप ने लोकप्रियता हासिल की है।
- तलाक की संख्या में वृद्धि से समाज में एकल माता-पिता की हिस्सेदारी बढ़ी है।
- एकल-पिता वाले परिवारों की तुलना में 5.4% अधिक एकल-माता वाले परिवार हैं।

महिलाओं का स्तर

- पारंपरिक घरों में पत्नी का पारिवारिक फैसलों में कोई हस्तक्षेप नहीं होता था।
    - आज के घर में, परिवार के खर्चों का बजट बनाने, बच्चों को अनुशासित करने, चीजें खरीदने और उपहार देने की बात आती है, तो महिला खुद को सत्ता में बराबर के रूप में देखती है।

कार्यों में समान भागीदारी:

- महिलाएं अब घरेलू काम तक ही सीमित नहीं हैं और उन्होंने अधिक आर्थिक, कानूनी और शैक्षिक अधिकार प्राप्त कर लिया है।
- चूंकि पति और पत्नी दोनों काम में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मध्यम वर्गीय परिवारों की आय में वृद्धि हुई है।

प्राधिकरण में परिवर्तन:

- सत्ता पितृसत्ता से ऐसे माता-पिता को हस्तांतरित हो गई है जो
    - निर्णय लेने से पहले अपने बच्चों से सभी प्रमुख विकल्पों पर परामर्श करते हैं।

बच्चों की बढ़ती आजादी:

- बच्चों और माता-पिता के बीच संबंध अधिक खुले हुए हैं।
- कई विधायी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप बच्चे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए हैं।

भारतीय परिवार संरचना में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारक

औद्योगीकरण

- ग्रामीण लोगों को काम और जीवन की उच्च गुणवत्ता की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित किया, अपने विस्तारित परिवारों के साथ अपने संबंधों को तोड़ दिया।
- संयुक्त परिवार प्रणाली की बुनियादी नींव को कमजोर कर दिया।

शहरीकरण

- एकाकी परिवारों का निर्माण हुआ।
- व्यक्तित्व और गोपनीयता पर जोर दिया गया है।

शिक्षा

- लोगों के दृष्टिकोण, विश्वासों, मूल्यों और विचारधाराओं को प्रभावित किया।
- प्रश्न पूछने की संस्कृति विकसित की।
- व्यक्तिवादी दृष्टिकोण विकसित हुआ।
- एकल परिवार संस्कृति को बढ़ावा दिया और संयुक्त परिवार की स्थापना को हतोत्साहित किया।

महिलाओं की बढ़ती जागरूकता

- उनके अधिकारों और समानता के बारे में जागरूकता बढ़ी।
- रोजगार बढ़ने से महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं
- अधिक समानता के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

विवाह के संरचना में परिवर्तन

- विवाह की आयु में परिवर्तन, साथी के चयन में लचीलापन और विवाह के बारे में व्यक्तिगत दृष्टिकोण सभी का संयुक्त परिवार प्रणाली पर प्रभाव पड़ा है।
- परिवार पर पितृसत्तात्मक शक्ति कमजोर हो गई है।

सामाजिक विधान

- अधिनियमों ने पारस्परिक संबंधों और पारिवारिक संरचना और संयुक्त परिवारों की स्थिरता को परिवर्तित किया है।
- 1956 के हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम ने महिलाओं को समान विरासत अधिकार प्रदान करके हिंदू संयुक्त परिवार संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव किए।
- माता-पिता की सहमति के बिना, 1954 का विशेष विवाह अधिनियम किसी भी जाति और धर्म में विवाह के चयन और विवाह की स्वतंत्रता की अनुमति देता है। इसका वैवाहिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

कृषि और ग्रामोद्योग में गिरावट

- गाँव के कारीगरों और शिल्पकारों द्वारा बनाए गए उत्पाद कारखानों में बने माल की कीमत और गुणवत्ता के साथ कम सक्षम होते हैं।
- भीड़भाड़ ने कृषि और आवासीय भूमि पर भी अनुचित दबाव डाला है।
- निराश्रित और बेरोजगार अपने परिवार से अलग होकर अन्यत्र काम की तलाश में अपना घर छोड़ देते हैं।

रिश्तेदारी / नातेदारी

- खून के बंधन, शादी और नातेदारों की मौजूदगी से बना रिश्ता।
- यह सबसे मौलिक सामाजिक संस्थाओं में से एक है।
- रिश्तेदारी सर्वव्यापी है और अधिकांश समुदायों में व्यक्तियों के समाजीकरण और समूह सामंजस्य के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- यह आदिम समुदायों में अत्यंत आवश्यक है और उनकी लगभग सभी गतिविधियों पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

- ए.आर. रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार: यह एक समाज में लोगों के बीच गतिशील संबंधों की एक प्रणाली है, इनमें से किसी भी रिश्ते में किन्हीं दो लोगों के आचरण को किसी न किसी तरीके से और सामाजिक उपयोग द्वारा अधिक या कम मात्रा में विनियमित किया जाता है।

रिश्तेदारी के प्रकार

1. **अफ़िनल रिश्तेदारी**
   - विवाह आधारित रिश्तेदारी।
   - जब कोई जोड़ा शादी करता है, तो नए रिश्ते बनते हैं।
   - लड़का न केवल लड़की और उसके परिवार के साथ एक बंधन बनाता है, बल्कि पुरुष और महिला दोनों के परिवार भी जुड़ जाते हैं।
   - उदाहरण: एग्नेट्स (सपिंडस, सोगेट्रास); संज्ञेय (माँ की ओर से); बंधु (आत्मबंधु, पितृबंधु, और मातृबंधु)।
2. **सजातीय रिश्तेदारी**
   - एक रक्त संबंधी रिश्तेदारी।
   - जैसे: माता-पिता और उनकी संतानों के बीच या एक ही माता-पिता के बच्चों के बीच।
   - संगत परिजन बेटे, बेटियां, भाई, बहन, चाचा आदि हैं।

रिश्तेदारी की डिग्री

1. **प्राथमिक परिजन**
   - व्यक्ति के सबसे निकट रिश्तेदार।
   - एकल परिवार के प्रत्येक सदस्य के परिवार के भीतर उसका प्राथमिक परिजन होता है।
   - आठ प्राथमिक परिजन: पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्री, छोटा भाई-बड़ा भाई, छोटी बहन-बड़ी बहन और भाई-बहन।
2. **माध्यमिक परिजन**
   - प्राथमिक परिजनों के रिश्तेदार
   - एक व्यक्ति के 33 अलग-अलग प्रकार के माध्यमिक रिश्तेदार हो सकते हैं
   - जैसे: ससुराल वाले, चचेरे भाई, चाची, भतीजी आदि।
3. **तृतीयक परिजन:**
   - किसी व्यक्ति के द्वितीयक रिश्तेदारों के प्राथमिक रिश्तेदार।
   - तृतीयक परिजन 151 विभिन्न प्रकार के होते हैं।
   - जैसे: पत्नी के भाई का पुत्र, बहन की पत्नी का भाई, इत्यादि।

रिश्तेदारी के सिद्धांत

- रिश्तेदारी विभिन्न सामाजिक समूहों में लोगों के बीच अंतःक्रिया के लिए मानक प्रदान करती है।
- यह उचित और स्वीकार्य संबंध स्थापित करता है और सामाजिक जीवन को नियंत्रित करता है।
- ये संबंध रिश्तेदारी के सिद्धांतों द्वारा शासित होते हैं।

वंश

- एक समूह जिसके सदस्यों का एक सामान्य पूर्वज होता है।
- किसी व्यक्ति के पूर्वजों का पता लगाने में मदद करता है।

वंश के प्रकार

एकरेखीय वंश

- पूर्वजों की केवल एक पंक्ति के माध्यम से रिश्तेदारी का पता लगाने की विधि।

प्रकार

- पितृवंशीय वंश: पुरुष वंश के माध्यम से रिश्तेदारी का पता लगाना।
- मातृवंशीय वंश: स्त्री वंश के माध्यम से नातेदारी का पता लगाना।

संज्ञानात्मक वंश

- माता और पिता दोनों के पूर्वजों के माध्यम से कुछ हद तक रिश्तेदारी का पता लगाने की विधि।

प्रकार

- द्विपक्षीय वंश: माता और पिता दोनों की ओर से रिश्तेदार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। बच्चों को माता-पिता दोनों के माध्यम से समान रूप से वंशज माना जाता है।
- उभयलिंगी वंश: बच्चे आमतौर पर वयस्क होने पर परिवार के माता या पिता के पक्ष को रिश्तेदार माने जाने के लिए चुनते हैं।

रिश्तेदारी और वंश के बीच अंतर

रिश्तेदारी:

- रिश्तेदारी रक्त और विवाह पर आधारित लोगों के बीच सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली है।
- जैविक संबंधों और गैर-जैविक संबंधों दोनों पर विचार करता है।
- दो मुख्य प्रकार: सजातीय रिश्तेदारी और आत्मीय रिश्तेदारी।

वंश

- वंश समाज में लोगों के बीच सामाजिक रूप से मौजूदा मान्यता प्राप्त जैविक संबंध है।
- केवल जैविक संबंधों पर विचार करता है।
- दो मुख्य प्रकार: एकतरफा वंश और संज्ञानात्मक वंश।

गोत्र परंपरा

- गोत्र एक संस्कृत शब्द है जिसमें “गो” से मतलब हमारी इंद्रियों से निकाला जाता है, और “त्र” रक्षा को दर्शाता है.
- गोत्र एक शब्द है जो एक कबीले, परिवारों के एक समूह या एक वंश - बहिर्विवाही और पितृवंशीय - के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसके सदस्य अपने वंश को एक सामान्य पूर्वज, आमतौर पर प्राचीन काल के एक ऋषि, से जोड़ते हैं।
- एक हिंदू के लिए गोत्र का बहुत महत्व है क्योंकि यह उसकी पहचान को दर्शाता है।

- सभी हिंदू समारोहों में गोत्र का विवरण आवश्यक होता है। एक धर्मनिष्ठ हिंदू प्रतिदिन सुबह अपना गोत्र और प्रवर बोलता है।
- गोत्र का उपयोग अनुष्ठान या संस्कार के प्रदर्शन के दौरान भी होता है।
- पुराने समय में प्रत्येक गोत्र का एक निश्चित कार्य होता था। इस प्रकार प्रत्येक वेद के कथन और अध्यापन के लिए विशिष्ट गोत्रों के पुजारी होते थे।
- कुछ बलिदानों के लिए केवल एक विशिष्ट गोत्र के पुजारियों की आवश्यकता होती थी।
- हिंदू धर्म में गोत्र को ऋषि परंपरा से संबंधित माना जाता है.
- ब्राह्मणों के लिए जो गोत्र विशेष रूप से महत्व रखता है. जिसका संबंध ऋषि कुल से माना गया है.
- प्राचीन काल में 4 ऋषियों के नाम से गोत्र परंपरा प्रारंभ हुई थी.
- ये चार ऋषि हैं **अंगिरा, कश्यप, वशिष्ठ और भृगु**.
- प्राचीन काल में मुख्य रूप से चार ही गोत्र माने जाते थे, परंतु बाद में 4 और गोत्र भी शामिल किए गए जो इस प्रकार हैं- **अत्रि, जन्मदग्नि, अगस्त्य और विश्वामित्र.**
- हिन्दू धर्म में **49** स्थापित गोत्र हैं।
- किसी विशेष गोत्र के सभी सदस्यों में स्वभाव या पेशे के आधार पर कुछ सामान्य विशेषताएं होती हैं।
- अतः गोत्र भारतीय जाति विशेष के भीतर की वह वंश परंपरा, जिसमें पारस्परिक विवाह संबंध वर्जित माना जाता है; क्योंकि मान्यतानुसार इसके सारे सदस्य एक ही मिथकीय पूर्वज की संतान होते हैं।
- हिन्दुओं में वैवाहिक संबंध स्थापित करते समय 'गोत्र' एक महत्त्वपूर्ण तथ्य होता है।

गोत्र परंपरा सिद्धांत

गोत्र परंपरा को समझाने के लिए कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं।

- **ब्राह्मणवादी सिद्धांत के अनुसार**, ब्राह्मण सात या आठ ऋषियों के प्रत्यक्ष वंशज हैं जिन्हें ब्रह्मा के मानस पुत्र माना जाता है। वे हैं गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि। इस सूची में कभी-कभी अगस्त्य को भी जोड़ा जाता है।
- इन आठ ऋषियों को गोत्रकारिन कहा जाता है जिनसे सभी 49 गोत्र (विशेषकर ब्राह्मणों के) विकसित हुए हैं। उदाहरण के लिए, अत्रि से आत्रेय और गविष्ठिरस गोत्र उत्पन्न हुए।
- इस सिद्धांत के अनुसार, क्षत्रियों और वैश्यों का कोई गोत्र नहीं होता है और उन्हें विभिन्न समारोहों के दौरान अपने पुरोहित के गोत्र का उच्चारण करना पड़ता है।
- हालाँकि कुछ क्षत्रियों और वैश्यों के अनुसार वे भी इन्हीं ऋषियों के वंशज हैं। इस कारण कई बार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य एक ही गोत्र का दावा करते हैं। हालाँकि, किसी गोत्र के सदस्यों का रक्त संबंधी होना जरूरी नहीं है, लेकिन वे गुरु के शिष्यों के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी या वंशज हो सकते हैं।
- **क्षत्रियों में**, राजपूत सूर्य (सूर्यवंशी), चंद्रमा (चंद्रवंशी) या अग्नि (अग्निकुला) के प्रत्यक्ष वंशज होने का दावा करते हैं।
- ये भी कई कुलों में विभाजित हैं, जिनमें से प्रत्येक का नाम किसी न किसी महान पूर्वज के नाम पर है। इसी प्रकार हिंदुओं की प्रत्येक जाति और वर्ग अनेक कुलों में विभाजित है।
- पुराने समय में ब्राह्मण गोत्र के सदस्यों की कुछ विशिष्ट विशेषताएं थीं जो उन्हें दूसरों से अलग करती थीं: भार्गव अपने सिर मुंडवाते थे, अंगिरस पांच चोटियां रखते थे, इत्यादि।
- गोत्र की अवधारणा के साथ निकटता से जुड़ा हुआ गोत्र प्रवर का है, जो कि जो भी ब्राह्मण यज्ञ अग्नि का अभिषेक करता है, उसके पूर्वज ऋषि के नाम से अग्नि का आह्वान किया जाता है।
- नियमानुसार एक प्रवर में चार या पाँच से अधिक साधु नहीं होते। एक ही प्रवर वाले दो गोत्रों में विवाह की अनुमति नहीं है। उदाहरण के लिए, कश्यप और शांडिल्य गोत्र के लोग आपस में विवाह नहीं कर सकते क्योंकि उनके प्रवरों में एक ही ऋषि असित हैं।

सात ब्राह्मण वंश व गोत्र

'गोत्र' शब्द से उस समसामयिक वंश परंपरा का भी संकेत मिलता है, जो एक संयुक्त परिवार के रूप में रहती थी और जिनकी संपत्ति भी साझा होती थी।

गोत्र मूल रूप से ब्राह्मणों के उन सात वंशों से संबंधित होता है, जो अपनी उत्पत्ति सात ऋषियों से मानते हैं। ये सात ऋषि निम्नलिखित थे-

- अत्रि
- भारद्वाज
- भृगु
- गौतम
- कश्यप
- वशिष्ठ
- विश्वामित्र

आठवाँ गोत्र

- इन गोत्रों में एक आठवाँ गोत्र बाद में अगस्त्य ऋषि के नाम से जोड़ा गया, क्योंकि दक्षिण भारत में वैदिक हिन्दू धर्म के प्रसार में उनका बहुत योगदान था। बाद के युग में गोत्रों की संख्या बढ़ती चली गई, क्योंकि अपने ब्राह्मण होने का औचित्य स्वयं के वैदिक ऋषि के वंशज होने का दावा करते हुए ठहराना पड़ता था।

गोत्र समझौते के अनुसार विवाह की अनुकूलता

- "प्राचीन ऋषि जिन्होंने वैदिक विद्या प्रदान की, उनकी संख्या सात है; मरीचि, अत्रि, वशिष्ठ, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलहा और क्रतु।
- प्राचीन ऋषियों की कई सूची हैं जिन्हें विश्वामित्र, कश्यप, गौतम, जमदग्नि जैसे गोत्रों का पूर्वज कहा जाता है। और भारद्वाज; भयानक ऋषियों का

- यह वंश (गोत्र) दो कारकों पर आधारित है; जन्म और शिक्षा। अर्थात पिता से पुत्र तक; और शिक्षक (गुरु - उपदेशक) से शिष्य तक।
- उपरोक्त ऋषियों के बीच प्रति ऋषि चार नक्षत्रों की दर से गोत्र को इस प्रकार वितरित किया गया है:
  (1) **मरीचि** : अश्विनी, पुष्य, स्वाति, अभिजित।
  (2) **वसिष्ठ**: भरणी, आश्लेषा, विशाखा, श्रवण।
  (3) **अंगिरस**: कृत्तिका, मघा, अनुराधा, धनिष्ठा।
  (4) **अत्रि**: रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, ज्येष्ठा, शतभिषाकम।
  (5) **पुलस्त्य** : मृगशीर्ष, उत्तराफाल्गुनी, मूल, पूर्वा भाद्रपद।
  (6) **पुलह** : आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद।
  (7) **क्रतु** : पुनर्वसु, चित्रा, उत्तराषाढ़ा, रेवती।

गोत्र में वैवाहिक स्थिति

- अंतर्प्रजनन को रोकने के लिए एक ही गोत्र (सगोत्र) के लोगों को विवाह करने की अनुमति नहीं है।उदाहरण के लिए, वशिष्ठ और विश्वामित्र गोत्र के लोगों के बीच विवाह की अनुमति नहीं है। इसका कारण यह है कि ये दोनों ऋषि परस्पर विरोधी थे और उनके वंशज परंपरागत शत्रु हैं।
- एक ही गोत्र के सदस्यों के बीच विवाह निषेध का उद्देश्य निहित दोषों को दूर रखने के अलावा यह भी था कि अन्य प्रभावशाली गोत्रों के साथ संबंध स्थापित कर अपना प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ाया जाए।
- बाद में ग़ैर ब्राह्मण समुदायों ने भी उनके ही जैसे प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से इस प्रथा को अपना लिया।
- मूलत: क्षत्रियों की भी अपनी वंशावलियां थीं, जिनमें से दो प्रमुख थीं- 'चंद्रवंश' तथा 'सूर्यवंश', जिनसे क्रमश: संस्कृत महाकाव्यों 'महाभारत' और 'रामायण' के नायक संबद्ध थे।
- इन वंश परंपराओं में 'बहिर्विवाह' की कोई स्पष्ट तस्वीर प्राप्त नहीं होती, क्योंकि वैवाहिक संबंध ज़्यादातर क्षेत्रीय आधारों पर तय होते थे।
- बाद में क्षत्रियों और वैश्यों ने भी गोत्र की अवधारणा को एक लोकाचार के रूप में अपनाया और इसके लिए उन्होंने अपने निकट के ब्राह्मणों या अपने गुरुओं के गोत्रों को भी अपना गोत्र बना लिया। किंतु यह नई प्रवृत्ति कभी प्रभावी नहीं हो पाई

2 Chapter समुदाय, संस्कृति और मूल्य

समुदाय

- समाज एक विचार है, समुदाय एक मूर्त्त अस्तित्व है।
- **समाजशास्त्रियों के अनुसार,** 'जब भी कभी किसी समूह का सदस्य, छोटा हो या बड़ा इस तरह से साथ-साथ रहते हैं कि वे सामान्य जीवन को आधारभूत स्थितियों में सहभागिता करते हैं, तो हम इस समूह को समुदाय कहते हैं।"
- इस तरह, एक समुदाय एक भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के समूह को कहते हैं।

समुदाय के लक्षण

- समुदाय व्यक्तियों के समूह या समुच्चय को कहते हैं।
- ये एक ही इलाके से संबंधित होते हैं।
- समुदाय के सदस्यों में जबर्दस्त सामुदायिक भावना होती है अथवा समानता का भाव तथा अपनत्व की भावना भी होती है।
- बहुत लंबे समय के दौरान लगातार साथ रहने से लोगों के समूह से समुदाय की रचना होती है।
- इसीलिए, यह अधिक स्थायी या सहिष्णु होता है अपेक्षाकृत उस समूह के जो किसी उद्देश्य से रहित होता है।
- समुदाय बृहत्तर लक्ष्यों के लिए कार्यरत रहता है।
- एक समुदाय साधारणतया एक विशिष्ट नाम से जुड़ा हुआ होता है।

समाज और समुदाय में अंतर

समाज	समुदाय
इसमें लोगों के बीच स्थापित प्रत्येक संबंध सम्मिलित होता है। वे संबंध क्षेत्रीय सीमाओं से परे होते हैं।	साधारणतया समुदाय, निश्चित क्षेत्र से संबंधित होता है।
यहाँ पर अपनेपन की भावना है, किंतु यह समुदाय की अपेक्षा कम मुखरित होती है।	अपनेपन की भावना मजबूत होती है। वे परस्पर एक दूसरे के नजदीक अनुभव करते हैं। यदि समुदाय के सदस्य के रूप में उनकी कोई आलोचना होती है तो उनमें अधिक तीव्र प्रतिक्रिया होती है।
समाज एक अमूर्त मानसिक संरचना है।	समुदाय एक मूर्त अस्तित्व है। फिर भी, यह कहा जा सकता है कि उनके बीच समानता और अंतर है, पर वास्तविकता में वे दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

समाज और समुदाय में समानता

1) दोनों स्वाभाविक रूप से बने सामाजिक समूह हैं, किंतु एक समुदाय मस्तिष्क में विशिष्ट रुचि को लेकर भी बनाया जा सकता है।
2) दोनों बृहत्तर उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।
3) दोनों समूहों के सदस्यों में अपनेपन की भावना निहित होती है।

संस्था

- संस्था की अवधारणा के दो अर्थ मौजूद हैं।
  - (i) संस्था शब्द से लोग आम तौर पर संगठन का अर्थ समझ लेते हैं, उदाहरण के तौर पर चिकित्सालय और विद्यालय को संस्था कहते हैं।
  - (ii) फिर भी, समाजशास्त्र में संस्था का अर्थ अलग है। यह परिभाषिक शब्द कार्यों के करने के ढंग को समझने के लिए प्रयुक्त होता है।
- संस्था विविध क्रिया-कलापों को करने के लिए स्थापित या मान्य आचरण संहिता से संबंधित होती है।
- वह मानव क्रिया-कलापों के लिए नियमों नियमावलियों से दिशा-निर्देश प्राप्त करते हैं।
- संस्था मानवीय कार्यों की रूप रेखा होती हैं।
- वास्तव में, लोग अचेतन रूप से पूजा पद्धति में उस आचरण संहिता को आत्मसात करते हैं, जिसे समाज में धार्मिक संस्थाएँ क्रियान्वित करती हैं। आप उन्हें देख नहीं सकते किंतु वे वहाँ होते हैं जो आपके व्यवहार के लिए 'करणीय' और 'अकरणीय' नियम प्रदान करते हैं।
- प्रत्येक संगठन में कुछ प्रयोग, नियम और प्रक्रियाएँ होती हैं। प्रक्रिया के ये रूप संस्थाएँ कहलाते हैं।
- ये समाज के द्वारा पहचाने और स्वीकार किए जाते हैं और वे व्यक्ति और समूह के बीच संबंधों को व्यवस्थित करते हैं।
- यदि नियम और प्रक्रियाएँ संस्था कहलाती हैं, तब व्यक्ति स्वयं संघ से संबंधित होते हैं। इसलिए, संघ और संस्था के बीच अंतरों में से एक अंतर यह होता है कि प्रथम नियम और प्रक्रिया का प्रतिनिधि त्व करता है तो दूसरा मानवीय घटक का प्रतिनिधित्व करता है।
- संस्था के ठोस रूप नहीं होते हैं। वे अमूर्त हैं।
- कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार, संस्थाएँ समाज के मूल अंग हैं।
- संस्थाएँ सभी संस्कृतियों और समाजों में पाई जाती हैं।
- कुछ संस्थाएँ समाज के अस्तित्व की आधारशिला होते हैं। कतिपय समाजशास्त्री इन्हें प्राथमिक संस्थाएँ कहते हैं।

Unleash the topper in you

- सभी समाजों में ये प्राथमिक संस्थाएँ पाई जाती हैं। संस्थाएँ संख्या में छह हैं:
  (i) आर्थिक संस्थाएँ (जैसे कि कृषि, उद्योग या कोई अन्य व्यवसाय)
  (ii) समाजिक संस्थाएँ (जैसे कि परिवार, विवाह और रिश्तेदारी)
  (iii) राजनीतिक संस्थाएँ
  (iv) शिक्षा या समाजीकरण
  (v) धर्म और
  (vi) अभिव्यंजक संस्थाएँ जैसे संगीत, नृत्य, ललित कलाएँ और साहित्य आदि।

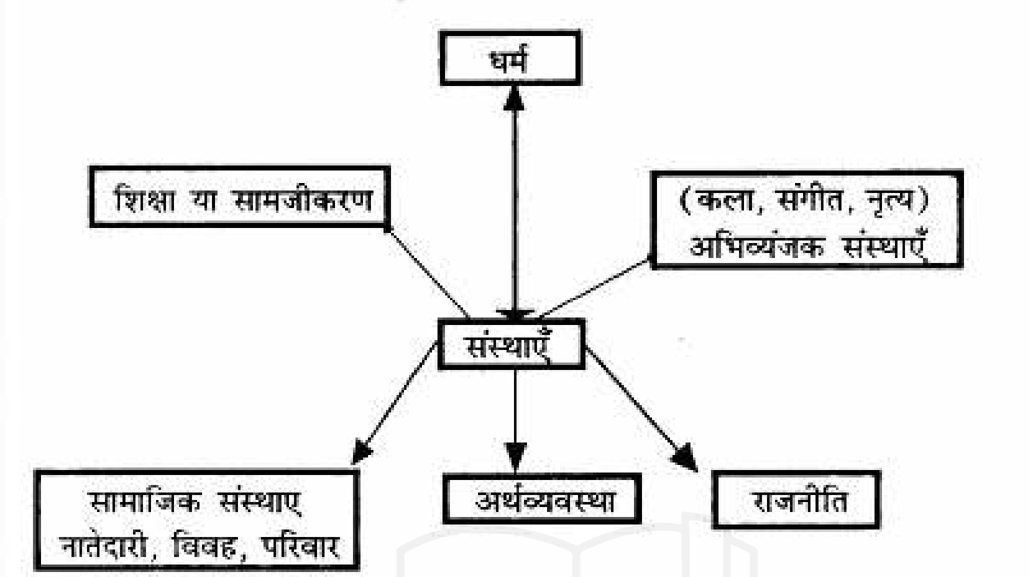

संघ

- संघ उन लोगों का एक समूह होता है, जो एक साथ हो जाते हैं और विशिष्ट लक्ष्यों या उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठित होते हैं।
- कभी-कभी ऐसे संगठनों के लक्ष्य सीमित संख्या में होते हैं। उदाहरण के लिए, आपने अपने आस-पास मुहल्ला सुधार समिति के कार्यों को या अपने पड़ोस के क्रिकेट क्लब को देखा होगा।
- इस तरह के कई संघ होते हैं जैसे स्वयंसेवी स्वैच्छिक संघ, म्यूजिक क्लब या ट्रेड यूनियन।

संघ के लक्षण

(i) यह व्यक्तियों का एक समूह होता है।
(ii) लोग संगठित होते हैं।
(iii) संघ के कार्यों (क्रियाकलापों) को चलाने के लिए कई नियम और अधिनियम होते हैं।
(iv) ये लोग कुछ विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सारे कार्यक्रम करते हैं।

समाज, समुदाय और संघ में अंतर

समाज और समुदाय	संघ
ये सहज सामाजिक समूह होते हैं।	लोग मस्तिष्क में विशिष्ट उद्देश्य लेकर इकट्ठे होते हैं।
दोनों अधिक स्थिर, सतत् और लंबे इतिहास वाले हैं।	ये थोड़े समय के लिए हो सकते हैं।
समाजिक संबंधों की एक पद्धति के रूप में समाज जीवित रह सकता है।	समूह सदस्यों के साथ महत्ता और उद्देश्य की विशिष्टता जुड़ी होती है।
समाज प्रथा, परंपरा और अलिखित कानूनों के द्वारा कार्य कर सकता है।	अधिकतर लिखित कानूनों और नियमों से कार्य होता है।

संस्कृति

प्रत्येक समाज की अपनी अलग संस्कृति होती है। समाज और संस्कृति के बीच इतना गहरा संबंध है कि कुछ विद्वान एक को दूसरे का पूरक मानते हैं, क्योंकि बिना समाज के संस्कृति का निर्माण नहीं हो सकता और बिना सांस्कृतिक मूल्यों, मानदंडों, रीति-रिवाजों, परंपराओं के समाज में रहने वाले लोगों का समाजीकरण नहीं हो सकता। इसलिए, सांस्कृतिक पहचान, संस्कृति और पर्यावरण, खेल और संस्कृति आदि का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

संस्कृति का अर्थ

संस्कृत शब्द दो शब्दों- 'साम' और 'कृति' से मिलकर बना है। 'सम्' उपसर्ग का अर्थ है 'अच्छा' और कृति शब्द का अर्थ है 'करना'। इस अर्थ में यह संस्कार का पर्याय है।

संस्कृति एक जटिल अवधारणा है। इसे एक ऐसी प्रणाली माना जाता है जिसमें व्यवहार के तरीके, भौतिक और गैर-भौतिक प्रतीक, परंपराएं, ज्ञान, विश्वास, अविश्वास आदि सन्निहित हैं। संस्कृति हमेशा एक ऐसी चीज है जिसे अपनाया और इस्तेमाल किया जा सकता है।

संस्कृति की परिभाषाएँ

- टायलर के अनुसार, "संस्कृति ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, रीति-रिवाजों और इसी तरह की अन्य योग्यताओं और आदतों से मिलकर बना एक जटिल समुच्चय है, जिसे मनुष्य ने समाज के सदस्य के रूप में अर्जित किया है।"
- बीरस्टेड के अनुसार , "संस्कृति वह जटिल संपूर्णता है जिसमें वे सभी तरीके शामिल हैं जिनसे हम सोचते हैं और कार्य करते हैं और वह सब जो समाज के सदस्य के रूप में हमारे पास है।"
- मैकियावेली के अनुसार, "संस्कृति उपार्जित आवश्यकताओं की एक प्रणाली और उद्देश्यपूर्ण कार्यों की एक संगठित प्रणाली है।"

संस्कृति की विशेषताएं

संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

- संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है।
- संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती है।
- संस्कृति सामाजिक गुणों का नाम है, जिसमें ज्ञान, नैतिकता और कानून शामिल हैं।
- संस्कृति सामूहिक आदर्शों से बनी होती है।
- संस्कृति के माध्यम से मानव की अनेक जैविक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।
- संस्कृति पर्यावरण के साथ अनुकूलन करना सिखाती है।
- संस्कृति एक सतत प्रक्रिया है।
- संस्कृति सार्वभौम है।
- संस्कृति समाज की देन है।

संस्कृति का महत्व

संस्कृति समाज की विरासत और संरक्षण है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है और जीवित रहती है। इसका महत्व इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है

- संस्कृति मनुष्य के जीवन का वह पहलू है, जो मनुष्य को पशु से अलग करती है, अर्थात संस्कृति ही मनुष्य को वास्तव में मानव बनाती है।
- संस्कृति क्षणभंगुर नहीं है। संस्कृति एक सार्वभौमिक क्रिया है, जो विरासत के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है।
- संस्कृति के माध्यम से ही व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास होता है, जिससे मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है।
- संस्कृति में समय, स्थान, समाज और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता होती है, वही गुण संस्कृति अपने सदस्यों को सिखाती है।
- संस्कृति विभिन्न इकाइयों से बनी है। इसलिए, यह संस्कृति संगठन और संतुलन का संकेत है।
- संस्कृति अपने सदस्यों के लिए एक आदर्श है।
- संस्कृति में विशिष्टता का गुण पाया जाता है।
- सांस्कृतिक वातावरण में ही मनुष्य का पालन-पोषण होता है। अतः संस्कृति मनुष्य की निर्माता है।

सामाजिक मूल्य

सामाजिक मूल्य समाज में प्रचलित आदर्श नियम या लक्ष्य हैं जिनके प्रति समाज के सदस्य श्रद्धा रखते हैं।

ये सामाजिक मूल्य सही-अनुचित, अच्छे-बुरे, योग्य-पात्र, नैतिक-अनैतिक, पाप-पुण्य आदि की व्याख्या करने में भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार मूल्य एक सामान्य मानक है और इन्हें उच्च स्तरीय मानदंड कहा जाता है।

मानकों का मूल्यांकन भी मूल्यों के आधार पर ही किया जाता है। मूल्य एक तरह से सामाजिक माप या समाज के नियमों और कानूनों को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, सामाजिक मूल्य समाज के उत्पाद हैं और समाज के सदस्य उनसे अवगत हैं। सामाजिक मूल्य किसी एक व्यक्ति से नहीं बल्कि पूरे समाज से जुड़े होते हैं ।

सामाजिक मूल्य व्यवहार का सामान्य तरीका है और सामान्य पैटर्न है जो यह तय करता है कि समाज में अब क्या गलत है। उदाहरण के लिए, हमेशा सच बोलो, सभी के प्रति दयालु रहो, हमेशा पुरुषों और महिलाओं के लिए सच बोलो, सभी पर दया करो, पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकार वाले दो लोकतंत्र, एक सुशासन प्रणाली, आदि सामान्य मूल्य हैं । हमारा समाज। मूल्य हमारे सामाजिक संबंधों में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । सामाजिक मूल्यों के द्वारा ही सामाजिक व्यवहार में एकरूपता बनी रहती है।

डॉ राधाकमल मुखीजी सामाजिक मूल्यों की अवधारणा को स्पष्ट करते हैं और कहते हैं कि मूल्य मानव समूहों और व्यक्तियों के प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया के साथ सामंजस्य स्थापित करने के उपकरण हैं । ऐसे मानदंडों को मूल्य कहा जाता है, जो व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। इन्हें सामाजिक अस्तित्व का केंद्रीय तत्व कहा जा सकता है, जिसके सदस्य इन्हें सुरक्षित रखने के लिए हर संभव कुर्बानी देने को तैयार रहते हैं। मूल्य एक प्रकार का सामूहिक लक्ष्य है जो प्रत्येक सदस्य के लिए विश्वास का प्रतीक है।

सामाजिक मूल्यों की परिभाषाएँ

सामाजिक मूल्यों की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

- राधाकमल मुखर्जी के अनुसार , "मूल्य वे इच्छाएँ और विशेषताएँ हैं जिन्हें समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है, जिनका आंतरिककरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया से शुरू होता है। जो उनके बाद धारणा बन जाती है।
- वाड्स के अनुसार, "सामाजिक मूल्य वे सामान्य सिद्धांत हैं जो दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। यह मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करने के साथ-साथ अपने आप में आदर्श एवं उद्देश्य भी है। सामाजिक मूल्य में न केवल यह देखा जाता है कि क्या होना चाहिए बल्कि यह भी देखा जाता है कि क्या सही है या क्या गलत है।
- हरालमबोस के अनुसार , " **एक मूल्य एक विश्वास है जो वर्णन करता है कि क्या अच्छा और वांछनीय है** ।"

- फेचर के अनुसार , "समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से मूल्यों को उन मानदंडों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके द्वारा समूह या समाज व्यक्तियों, प्रतिमानों, उद्देश्यों और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक वस्तुओं के महत्व का न्याय करते हैं।"

सामाजिक मूल्यों के प्रकार

सामाजिक मूल्यों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है

1. **व्यक्तिगत मूल्य** - व्यक्तिगत मूल्य वे मूल्य हैं जो मानव व्यक्तित्व के विकास से संबंधित हैं, जिसके कारण मानव व्यक्तित्व की रक्षा की जाती है जैसे ईमानदारी, रॉयल्टी, सच्चाई, सम्मान आदि।
2. **सामूहिक मूल्य** – सामूहिक मूल्य समूह की ताकत से संबंधित होते हैं , अर्थात समूह के सामूहिक मानदंड होते हैं, जैसे न्याय, सामूहिक दृढ़ता, समानता आदि।

सामाजिक मूल्य डॉ. पदानुक्रमित प्रणाली के अनुसार मुखर्जी ने वर्गीकृत किया है

1. स्थायी मूल्य व्यक्ति और समाज के लक्ष्य और संतुष्टि हैं , जो व्यक्ति और समाज द्वारा जीवन और मन के विकास के लिए अपनाए जाते हैं, जो व्यक्ति के व्यावहारिक अंग हैं। ये मूल्य पारलौकिक और अमूर्त हैं । मानव जीवन में इनका सर्वोच्च एवं विशिष्ट स्थान है, जैसे- "सत्यम शिवम् सुंदरम "।
2. संसाधन मूल्य संसाधन मूल्य वे हैं जो व्यक्ति और समाज द्वारा अंतिम मूल्यों को प्राप्त करने, उनकी सेवा करने और उन्हें सुधारने के साधन के रूप में अपनाए जाते हैं। इस प्रकार साधन मूल्यों के उचित चयन पर व्यक्ति और समाज द्वारा प्राप्य मूल्यों को प्राप्त करना संभव है। स्वास्थ्य, धन, पेशा, शक्ति, सुरक्षा, स्थिति आदि संसाधन मूल्य हैं क्योंकि इनका उपयोग व्यक्ति द्वारा कुछ लक्ष्यों और संतुष्टि को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अक्सर लोग अंतिम मूल्यों की तुलना में साधन मूल्यों से अधिक जुड़े होते हैं।

सामाजिक मूल्यों की विशेषताएं

- सामाजिक मूल्यों का संबंध व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक होता है।
- सामाजिक मूल्य सामूहिक अंतःक्रिया के उत्पाद और परिणाम हैं।
- सामाजिक मूल्य उच्च स्तरीय सामाजिक मानदंड हैं । जिससे हम किसी वस्तु को नापते हैं।
- समाज और समूह के सभी सदस्य एक मत से सामाजिक मूल्यों को स्वीकार करते हैं। इस कारण समाज मूल्यों के उल्लंघन पर प्रतिक्रिया करता है।
- सामाजिक मूल्यों में समय और परिस्थितियों के साथ परिवर्तनशीलता होती है , अर्थात सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं।
- विभिन्न समाजों में विभिन्न प्रकार के सामाजिक मूल्य होते हैं।
- सामाजिक मूल्य सामाजिक कल्याण और विभिन्न सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं । सामाजिक मूल्यों की प्रकृति सार्वभौमिक है अर्थात मूल्य सभी समाजों में मौजूद हैं ।
- सामाजिक मूल्य एक स्तरीय प्रणाली है ।
- सामाजिक मूल्यों की निरंतरता का कारण व्यक्ति की भावना और भावनाएं हैं ।

सामाजिक मूल्यों का महत्व और कार्य

सामाजिक मूल्य हमारे दैनिक व्यवहार विनिमय के सामान्य सिद्धांत हैं । वे न केवल हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं बल्कि वे आदर्श भी हैं। मूल्यों के महत्व का उल्लेख करते हुए डॉ. मुखर्जी कहते हैं कि सामाजिक विज्ञान के लिए मूल्यों का उतना ही महत्व है जितना भौतिकी के लिए गति और गुरुत्वाकर्षण का और शरीर विज्ञान के लिए पाचन और रक्त संचार का। गति, गुरुत्वाकर्षण और रक्त परिसंचरण को प्रकृति की घटनाओं से अलग करके मापा और तैयार किया जा सकता है, लेकिन मूल्य। जीवन, बुद्धि और समाज से किसी को अलग करना संभव नहीं है। मनुष्य की बुनियादी चाहतों और जरूरतों को पूरा करने में मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक मूल्य समाज को एक साथ, संगठित और नियंत्रित रखते हैं । एमिल दुर्खाइम सामाजिक मूल्यों को आदर्श मानते थे। आपका मत है कि मूल्य की चर्चा एक सामाजिक तथ्य के रूप में की जानी चाहिए। दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक मूल्य, सामाजिक तथ्य की तरह, दो आवश्यक विशेषताएं हैं: बाह्यता और मजबूरी। दुर्खीम का कहना है कि मूल्य सामाजिक सदस्यों की मानसिक अंतःक्रिया का परिणाम हैं । सामाजिक मूल्य किसी एक व्यक्ति का मूल्य नहीं है, यह व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित करता है और व्यक्ति को एक विशेष तरीके से व्यवहार करने के लिए मजबूर करता है।

सामाजिक मूल्यों के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं

- सामाजिक मूल्य समाज में एक विशेष प्रकार के मानक और स्वीकृत व्यवहार उत्पन्न करते हैं ।
- एक समूह और एक व्यक्ति की क्षमता और क्षमता का आकलन सामाजिक मूल्यों के माध्यम से ही संभव है। समाज में किसी व्यक्ति की स्थिति और स्थिति का मूल्यांकन मूल्यों द्वारा किया जाता है।
- व्यक्ति की विभिन्न स्थितियाँ और उससे जुड़ी भूमिकाएँ मूल्यों द्वारा निर्देशित होती हैं।
- सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों के अनौपचारिक नियंत्रण में मदद करते हैं ।
- सामाजिक मूल्य मानव व्यवहार की अनुरूपता और विचलन की व्याख्या करते हैं ।

सामाजिक मानदंड

समाज में सभी व्यक्तियों के सम्बन्धों में एक निश्चित क्रम पाया जाता है। सामाजिक संबंध बनाने के लिए व्यक्तियों से कुछ खास तरीकों से व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है।

व्यक्तियों की अंतःक्रिया की प्रक्रिया कुछ सामाजिक नियमों के अनुसार होती है। ये नियम समूह के लिए आदर्श होते हैं, इसलिए इन्हें आदर्श नियम या सामाजिक मानदंड या सामाजिक मानदंड कहा जाता है।

सरल शब्दों में, हम उन नियमों को सामाजिक मानदंड कहते हैं, जिनके लिए किसी विशेष स्थिति में सांस्कृतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विशेषताओं और समाज के व्यक्तियों की अपेक्षाओं के अनुसार एक विशेष प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता होती है। अर्थात् वे व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करते हैं।

समाजशास्त्रीय अर्थ में, सामाजिक मानदंड वे कारक हैं जिनके द्वारा यह अपने सदस्यों के व्यवहार को इस तरह नियंत्रित करता है कि वे अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करके अपनी प्रक्रियाओं को पूरा करते हैं।

सामाजिक मानदंडों की परिभाषाएँ

- **बर्स्टेड के अनुसार,** "सामाजिक मानदंड मानकीकृत अभ्यास का एक रूप है। यह एक कार्य को पूरा करने का एक तरीका है जिसे हमारे समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है।" इस प्रकार, बर्स्टेड ने सामाजिक कसौटी को सामाजिक व्यवहार के माप के रूप में देखा है।
- **किम्बले यंग के अनुसार,** "सामाजिक मानदंडों से हमारा तात्पर्य समाज द्वारा रखी गई अपेक्षाओं से है।"
- **ग्रीन के अनुसार,** "सामाजिक मानदंड स्थितिजन्य स्थितियों में अपेक्षित व्यवहार के बारे में मानक सामान्यीकरण हैं।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समाज ने हमारे दैनिक जीवन की कई गतिविधियों को विनियमित करने के लिए कुछ सामाजिक मानदंड बनाए हैं। हम किसी भी सामाजिक स्थिति के अनुकूल सेट पैटर्न पर विचार करके बातचीत की प्रकृति का अनुमान लगा सकते हैं।

सामाजिक मानदंड की विशेषताएं

सामाजिक मानदंडों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं

- सामाजिक मॉडल संस्कृति का एक हिस्सा है। सामाजिक मानदंड समाज के ऐसे सामान्य नियम हैं जिन्हें समाज द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार स्वीकार किया जाता है।
- सामाजिक मानदंडों का कार्यान्वयन सकारात्मक और नकारात्मक है। प्रत्येक सामाजिक मानदंड में व्यक्ति और समूह के प्रति कर्तव्य और नैतिकता शामिल होती है।
- सामाजिक मानदंड व्यक्तियों को काम पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।
- विभिन्न समाजों में सामाजिक मानदंड भिन्न हो सकते हैं।
- सामाजिक मानदंड व्यक्ति और समाज के लिए उपयोग किए जाते हैं।
- सामाजिक मानदण्डों के सरल स्वभाव के कारण उनके अनुसार व्यवहार आदत बन जाता है।
- किसी खास काम के लिए अलग-अलग लोगों के मानदंड अलग-अलग होते हैं, लेकिन वे सभी के लिए समान होते हैं।
- सामाजिक मानदंडों के अनुसार, समाज के सभी सदस्यों का व्यवहार सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप रहता है।
- समाज सामाजिक मानदंडों के अनुसार अपने सदस्यों का सामाजिककरण करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को सामाजिक मानदंडों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारित किया जाता है।

सामाजिक मानदंडों का वर्गीकरण

सामाजिक मानदंडों की प्रकृति को उनके विभिन्न प्रकारों से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। हा
लाँकि सामाजिक मानदंडों का कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत वर्गीकरण नहीं है, फिर भी इसके कुछ प्रकार हैं जो सभी समाजों में पाए जाते हैं। जिसमें कुछ सामाजिक मानदंड सकारात्मक होते हैं और कुछ नकारात्मक।

- **सकारात्मक मानदंड** वे हैं जो कुछ व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसे कि अधिकारी के कार्यालय में आने पर कर्मचारियों का खड़ा होना।
- **नकारात्मक मानदंड** वे हैं जो पारंपरिक भारतीय समाज में पत्नी द्वारा पति का नाम न लेने जैसे कुछ व्यवहारों को प्रतिबंधित करते हैं।

नॉर्मन स्टोर वर्गीकरण

नॉर्मन स्टोर ने चार प्रकार के मानदंडों पर चर्चा की है।

- **निर्धारित मानदंड** समाज द्वारा निर्धारित मानदंड हैं, प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षित व्यवहार, जैसे बेटे को बूढ़े माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए।
- **स्वीकृत मानदंड** स्वीकृत मानदंड वे व्यवहार हैं जो अनिवार्य नहीं हैं लेकिन किए जाने पर सहन किए जाते हैं, जैसे कि कभी-कभी देर रात घर लौटना।
- **वरीयता मानदंड** वरीयता मानदंड वे व्यवहार हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य नहीं है, लेकिन अगर उनका पालन किया जाता है तो इसे अच्छा माना जाता है , जैसे माता-पिता को अपने बच्चों को अच्छे कपड़े पहनाने चाहिए।
- **निषेधात्मक मानदंड** निषेधात्मक मानदंड वे व्यवहार हैं जो किसी भी व्यवहार को करने से रोकते हैं, जैसे कि हर जगह शौच नहीं करना चाहिए।

किंग्सले डेविस वर्गीकरण

डेविस (1960) ने सामाजिक मानदंडों का एक समाजशास्त्रीय और अक्सर स्वीकृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है:-

- शैलियां
- लकीर के फकीर
- कानून
- धर्म, नैतिकता और रीति-रिवाज
- संस्थानों
- रीति-रिवाज और शिष्टाचार
- फैशन और धुन

सामाजिक मानदंडों और मूल्यों के बीच अंतर

मूल्य व्यवहार का सामान्य तरीका है और स्वीकृत मानदंड हैं जो समाज में अच्छे या बुरे, सही या गलत की विशेषता बताते हैं। जैसे हमेशा सच बोलो, सब पर दया करो, पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार मिलना चाहिए आदि हमारे समाज में सामाजिक मूल्य हैं।

मान सामान्य होते हैं जबकि मानदंड विशिष्ट होते हैं। ऐसे कई सामाजिक मानदंड हैं जो एक समाज में एक मूल्य का पालन करने के लिए पाए जा सकते हैं। अंततः मूल्य साध्य है जबकि मानक साधन हैं। मूल्य सामाजिक मानदंडों के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं । उदाहरण के लिए, ईश्वर में आस्था रखना एक मूल्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए कुछ मानदंड बनाए गए हैं, जैसे कि मंदिर में जूते-चप्पल उतारना, वहाँ माथा टेकना और पवित्र वस्तुओं को न छूना।

सामाजिक मानदंडों के बारे में अन्य तथ्य

- ब्रूम तथा सोलजेनिक ने प्राचलों को व्यवहार का ब्लू प्रिंट (नकारात्मक) कहा है :- सामाजिक आदर्श नियम का सिद्धान्त टॉनीज ने दिया है ।
- बर्स्टेड ने अपनी पुस्तक 'द सोशल ऑर्डर' में सामाजिक प्रतिमानों के बारे में चर्चा की है।
- उन्होंने सामाजिक मानदंडों का पालन करने के चार कारण बताए हैं।
  1. सामाजिक शिक्षा
  2. आदत
  3. उपयोगिता
  4. समूह की पहचान

सामाजिक नियम

सामाजिक नियम से अभिप्राय समाज में प्रचलित इन परम्पराओं, रीति-रिवाजों से है, जिन्हें समाज मान्यता देता है और समाज के सभी सदस्यों से उनके पालन की अपेक्षा की जाती है। इसके अंतर्गत समाज के सभी सदस्य किसी विशेष विषय के संबंध में समान व्यवहार या व्यवहार करते हैं। सामाजिक नियम मानव व्यवहार को नियंत्रित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करते हैं।

सामाजिक नियमों की विशेषताएं

- समाज के सभी सदस्यों से सामाजिक नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है।
- सामाजिक नियम समाज के सदस्यों द्वारा ही बनाए जाते हैं।
- सामाजिक नियम समाज के सभी सदस्यों द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।
- सामाजिक नियम प्रकृति में अनौपचारिक होते हैं।
- सामाजिक नियमों में समाज के सभी सदस्यों की सहमति से संशोधन किया जा सकता है।
- सामाजिक नियम समाज को मजबूत करता है जिससे समाज के सभी सदस्य एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।
- सामाजिक नियम समाज का मार्गदर्शन करते हैं।

सामाजिक नियमों का महत्व

सामाजिक जीवन में नियमों के महत्व को प्रत्येक समाज ने स्वीकार किया है। आदिम समाजों में इन नियमों का महत्व राज्य के कानून से अधिक था। इसका विशेष कारण यह था कि साधारण और आदिम समाजों में व्यक्ति का जीवन बहुत ही रूढ़िवादी था और साथ ही व्यक्ति के जीवन में धर्म का अधिक महत्व था। ये सामाजिक नियम पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारित किए गए थे और उनका उल्लंघन पूर्वजों का अपमान माना जाता था।

सामाजिक नियमों के महत्व को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है:

1. नियम समाज के लिए हितकर होते हैं, सामाजिक नियम केवल अंधविश्वासों और कुरीतियों का संग्रह नहीं होते, अपितु उनकी सामाजिक उपयोगिता भी होती है। जब भी कोई नियम बनता है, उस समय वह समाज के सभी लोगों के कल्याण का अंत होता है। यद्यपि ये परिवर्तन भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बदलते रहते हैं, फिर भी ऐसा प्रत्येक परिवर्तन तत्कालीन समाज के हित को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस प्रकार ये सभी नियम एकल कल्याणकारी राज्य के निर्माण में सहायक होते हैं।
2. नियम सामाजिक जीवन में एकरूपता स्थापित करते हैं, सभी नियम विभिन्न सामाजिक स्थितियों से संबंधित व्यवहार के कुछ मानदंड प्रस्तुत करते हैं और उन्हें लागू करने के लिए समाज के सदस्यों पर दबाव डालते हैं। परिणाम यह होता है कि समाज के लोग भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में समान व्यवहार करते हैं। इससे सामाजिक जीवन में एकरूपता स्थापित होती है।
3. व्यक्तित्व निर्माण में नियम सहायक होते हैं, व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक नियमों का विशेष योगदान होता है। व्यक्ति अपने जन्म के समय से ही कुछ सामाजिक नियमों को प्राप्त कर लेता है और उसका जीवन सामाजिक नियमों के अनुसार चलता रहता है। इस प्रकार व्यक्ति का समाजीकरण इन्हीं नियमों द्वारा होता है। प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तित्व इन नियमों से अनिवार्य रूप से प्रभावित होता है और इसी से मनुष्य के सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है।
4. नियम सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूलन में मदद करता है सामाजिक नियम पिछली पीढ़ियों के सफल अनुभवों से समृद्ध कई समस्याओं का एक तैयार समाधान प्रदान करने में है और इस प्रकार व्यक्ति कई समस्याओं को जल्दी हल करने में सक्षम होता है। इस प्रणाली के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न सामाजिक समस्याओं और स्थितियों के लिए अनुकूलन करता है, यह अनुकूलन व्यक्ति के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
5. नियम सीखने की प्रक्रिया में सहायता करते हैं, कई सामाजिक नियमों में समाज के अनुभवी व्यक्तियों का व्यवहार और अनुभव शामिल होता है, इसलिए इन नियमों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया आसान हो जाती है। समाज से प्राप्त ये नियम मनुष्य के मानसिक श्रम को कम करते हैं। क्या किसी को कई सामाजिक गतिविधियों को नए सिरे से नहीं सीखना पड़ता है। इस प्रकार ये नियम समाज के सभी लोगों के व्यवहार बन जाते हैं और नई पीढ़ी अनेक सामाजिक व्यवहारों को पुनः सीखने से बच जाती है । इस तरह सामाजिक नियम व्यक्ति की सीखने की प्रक्रिया में बहुत मदद करते हैं।

6. नियम सामाजिक नियन्त्रण में सहायक होते हैं, सामाजिक नियन्त्रण में सामाजिक नियमों का अत्यधिक महत्व होता है। हालांकि इन नियमों के पीछे कोई कानूनी बल नहीं है, फिर भी मनुष्य, सामाजिक निंदा। सामाजिक अनुकूलन आदि से प्रभावित होकर इन सामाजिक नियमों का उल्लंघन न करें। क्योंकि ये नियम समाज के अनुभवहीन लोगों द्वारा तैयार किए जाते हैं, इसलिए व्यक्ति उन्हें जल्दी स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार, सामाजिक नियम सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन हैं।